

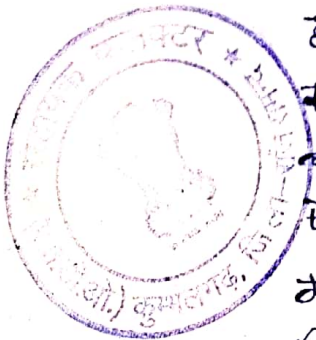
7/12/20 पत्रावली पेश हुई पीठारीन अधिकारीजी
निर्वाचन कार्य।
में व्यस्त होने से पत्रावली पूर्व आदेश की पालना
में दिनांक 24.12.2020 को पेश हो।
D.O

24/12/20 पत्रावली पेश हुई। अधिवक्ता पक्ष
उप. है। पत्रावली दिनांक 11.2.2021
को पेश हो।

11/2/20 पत्रावली पेश हुई। अधिवक्ता
पक्ष उप. है। पत्रावली दिनांक 24/2/2021
को पेश हो। पत्रावली पेश किए बिना उपर
दिक्कत गई है। शिवांगिमिहल को।

24/2/21 पत्रावली पेश हुई। अधिवक्ता पक्ष का
उपस्थित हो व्यस्त हुनी पत्रावली
व्यस्त अदेश दिनांक 16/2/2021 को पेश हो।

26/02/21 पत्रावली पेश हुई। अधिवक्ता पक्ष सरानू
व्यस्त स्थित हैं। अधिवक्ता प्राची ने प्रार्थना
पत्र में अंकित तथ्यों को दोहराते हुए
अपनी बहस में बताया कि वादग्रस्त
भूमि का "चारभुजा जी स्थान" की भूमि का
है व माफी मूलनार्थ में प्राचीगण के पूर्वजों
को चारभुजाजी की सेवा पेटे खाने रुमाने
के लिए दी गई। उक्त भूमि का मालिकाना
हक चारभुजा जी में निहित है। चारभुजाजी
सरानू अधिवक्ता में नाबालिग है जिनकी
ओर से प्राचीगण द्वारा यह प्रार्थना पत्र
पेश किया है। वादग्रस्त भूमि का विपक्षी
गण के नाम पर दर्ज होने से विपक्षीगण
विरुद्ध दस्तान्तरण करने हेतु आभादा है।



पुनः पत्र कलक्टर
सि. ज. ज. कुम्भलगड
जिला-राजसमन्त

संख्या

५१

सन २०१८

किस्म मुकदमा

प्रार्थना पत्र

रतनसिंह वगैरे

बनाम

उदयशरण वगैरे

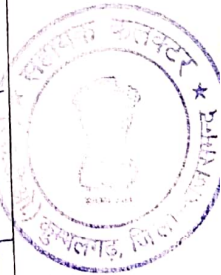
हस्ताक्षर/सूचना

आदेशिका

जिसमें मूल वाद के निस्तारण लड़ रीका जाना आवश्यक है। अतः प्रार्थनापत्र प्राप्त होने पर न्यायालय द्वारा दिनांक 18.06.2018 को जारी अंतरिम आदेश निषेधाज्ञा मूल वाद के निस्तारण तक सुर्खी की जावे। विपक्षीयों की ओर से प्रस्तुत जवाब में अंतरिम आदेशों को दोहराते हुए विपक्षीयों के अधिवक्ता ने कंपनी बहस में बताया कि विपक्षीय वर्तमान में स्वतंत्र रूप से विपक्षीय अटलमेंट से पूर्व से ही इनके पूर्वजों के समय से विरासत में प्राप्त वादग्रस्त भूमि पर कब्जा होकर स्वतंत्र है। स्वतंत्र के विरुद्ध अंतरिम आदेश का उल्लंघन पाश्चिमाती की जा सकती है। प्रार्थनापत्रों पर अंतरिम आदेशों के सिद्धान्त से प्रतिबंधित है। अतः प्रार्थनापत्र का प्रार्थनापत्र अस्वीकार कर स्वतंत्र किया जावे एवं साथ ही आदेश दिनांक 2018 RBJ 499, RLW 2013 (1) RJ, RRD-14.05.2017 पेश किए।

बहस पर मनन किया एवं आदेश दिनांक का गहनता से अवलोकन किया गया। वर्तमान में विपक्षीय वादग्रस्त भूमि के स्वतंत्र है। नोट पर कब्जा है। प्रथम दृष्टया प्रार्थनापत्रों के पक्ष में नहीं बनता है। सुविधा का अंशुलता भी विपक्षीयों के पक्ष में है। अपूर्ण शक्ति भी विपक्षीयों को होगी। जिससे प्रार्थनापत्र इस प्रस्तुत प्रार्थनापत्र स्वतंत्र भोग्य प्रतीत होना है।

अतः प्रार्थनापत्र इस प्रस्तुत प्रार्थनापत्र अस्वीकार कर स्वतंत्र किया जाता है। पत्रावली फाइल नुमां ६० नंबर को कम है। निर्णय सुले न्यायालय में सुनाया गया।



निहायक कलक्टर
(स.जी.अ.) कुम्भलगढ़
जिला-राजसमन्द